SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.38

# ‘महाभारत’: एक त्रिगुणात्मक पैरेंटिंग गाइड

# ‘MAHABHARAT’ A TRIGUNA-BASED PARENTING GUIDE

**डॉ. बी. वी. एन. उमा गायत्री**
Email: umagayathri395@gmail.com

**प्रस्तावना-**

*क्या हज़ारों सालों पहले लिखा गया कोई महाकाव्य आज के ‘डिजिटल युग’ में आपके बच्चे के भविष्य को संवार सकता है? जवाब है- हाँ! आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, स्क्रीन टाइम और पीयर प्रेशर के दौर में अभिभावकत्व या पैरेंटिंग एक बेहद जटिल काम हो चुका है। ऐसे में हमारे पौराणीक और ऐतिहासिक ग्रंथ इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करने में अत्यंत सहायक होते हैं। इस मार्गदर्शन को समझने के लिए हमें इस चश्मे से उनको पढ़ना आना चाहिए। ऐसा ही एक ऐतिहासिक महाकाव्य है महाभारत। महाभारत न केवल एक भारतीय धर्म ग्रंथ या एक युद्ध ग्रंथ है बल्की मानव मूल्यों, संबंधों और कर्तव्यों (धर्म) का एक जटिल ताना-बाना है। इस ग्रन्थ में ‘मातृ धर्म’ और ‘पितृ धर्म’ को केवल जैविक (Bioolgical) दायित्व नहीं, बल्कि आत्मा के विकास की सीढ़ी माना गया है।*

*भारतीय दर्शन और मनोविज्ञान (Psychology) में मानव मन के सभी मनोविकारों को सत्त्व, रज और तम नामक तीन प्रकार के गुणों में समाहित करके उन्हें 'त्रिगुण' कहा गया है। सांख्य दर्शन और स्वयं महाभारत के अंश ‘भगवद्गीता’ के अनुसार, ये तीन गुण केवल ब्रह्मांड की प्रकृति के मूल तत्व नहीं हैं, बल्कि ये मानव मन और व्यवहार को संचालित करने वाले मुख्य स्तंभ भी हैं-*

*“सत्त्वं रजस्तम इति गुणाःप्रकृतिसंभवाः।*
*निबध्नंति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।”[i]*

*आधुनिक भाषा में कहें तो त्रिगुण हमारी मानसिक प्रक्रिया को संचालित करती हैं, जो हमारे दुनिया को देखने के नज़रिए, निर्णयात्मक बुद्धि और परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया (React) देने के तरीकों को तय करती हैं। मनुष्य के भीतर ये तीनों गुण हमेशा मौजूद रहते हैं, लेकिन किसी भी व्यक्ति में समय और परिस्थिति के अनुसार कोई एक गुण प्रधान होता है।*

**तीन गुणों का परिचय (The Three Gunas Explained):**

‘भगवद्गीता’ में इस विषय में कहा गया है कि-

*“तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।*
*सुख संगेन बध्नाति ज्ञान संगेन चानघ।।”[ii]*

अर्थात् हेनिष्पाप (अर्जुन)! सतोगिण अन्य गुणों से अधिक शुद्ध होने के कारण प्रकाशमयी और मनुष्यों को सारे पाप कर्मों से मुक्त करने वाला है। जो लोग इस गुण में स्थित होते हैं, वें सुख तथा ज्ञान के भाव से बंध जाते हैं। यानि सत्त्व गुण (Sattva) इन्सान में प्रकाश, ज्ञान, पवित्रता, सत्य, संतुलन

और शांति का प्रतीक है। जब मन में सत्त्व गुण बढ़ता है, तब व्यक्ति शांत, स्पष्ट, संवेदनशील और दयालु महसूस करता है। ऐसा व्यक्ति सही और गलत का अंतर आसानी से समझ पाता है। उसमें धैर्य होता है और वह बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की मदद करता है।

*"रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्।*

*तन्निबध्नाति कौंतेय कर्मसंगेन देहिनम्।।"*[iii]

अर्थात् हे कुंतीपुत्र (अर्जुन)! रजोगुण की उत्पत्ति असीम आकांक्षाओं और तृष्णाओं से होती है और इसी के कारण यह देहधारी जीव (व्यक्ति) सकाम कर्मों से बंध जाता है (सक्रिय होता है) यानि रजोगुण (Rajas) गति, ऊर्जा, क्रिया, इच्छा, राग-द्वेश, चंचलता और महत्वाकांक्षा का प्रतीक है। जब मनुष्यमन में रजोगुण प्रधान होता है, तब व्यक्ति के भीतर कुछ पाने की तीव्र इच्छा, प्रतिस्पर्धा की भावना और छटपटाहट पैदा होती है। ऐसा व्यक्ति हमेशा व्यस्त रहता है, उसे नाम, प्रसिद्धि और भौतिक सुखों की आशा होती है। वह परिणामों पर बहुत ज्यादा केंद्रित होता है।

*"तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।*

*प्रमादालस्यनिद्राभिस्तत्रिबंधाति भारत।।"*[iv]

अर्थात् हे भरतपुत्र (अर्जुन)! तुम जान लो कि अज्ञान से उत्पन्न तमोगुण समस्त देहधारी जीवों (व्यक्तियों) का मोह है। इस गुण के फलस्वरूप जीव पागलपन, आलस्य और नींद जैसे लक्षणों से बंध जाते हैं। यानि तमोगुण (Tamas) अंधकार अज्ञान, आलस्य, भ्रम, अस्थिरता, जड़ता और लापरवाही का प्रतीक है। जब इनसान पर तमोगुण हावी होता है, तब मन में भारीपन, सुस्ती, नकारात्मकता और अवसाद (Depression) जैसी भावनाएं आती हैं। ऐसा व्यक्ति बदलाव से डरता है, जिम्मेदारियों से भागता है, और उसमें निर्णय लेने की क्षमता (विवेक) खतम हो जाती है।

*"सत्वं सुखे संजयति रजः कर्माणि भारत।*

*ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत।।"*[v]

अर्थात् हे भरतपुत्र (अर्जुन)! सतोगुण मनुष्य को सुख से बांधता है, रजोगुण सकाम कर्म से बांधता है और तमोगुण मनुष्य के ज्ञान को ढककर उसे पागलपन से बांधता है। यानि सत्त्वप्रधान व्यक्ति का मन संतुलित और स्पष्ट होता है। उसका खुद पर नियंत्रण होता है (Emotional Intelligence)। वह तनाव में भी शांत रहता है और रचनात्मक (Creative) सोच पाता है। रजोगुणप्रधान व्यक्ति का मन अशांत और अत्यधिक सक्रिय रहता है। वह एंग्जायटी, इच्छाओं और ईर्ष्या से घिरा रहता है। उसका मन हमेशा 'अगले लक्ष्य' के पीछे भागता रहता है। तमोगुणप्रधान व्यक्ति का मन सुस्त और भ्रमित होता है। वह अज्ञान, डिप्रेशन, अत्यधिक नींद और टालमटोल का शिकार होता है। वह सच को देखना ही नहीं चाहता।

वैसे तो मनुष्य का मनोविज्ञान स्थिर नहीं रहता। वह इन तीनों गुणों के उतार-चढ़ाव पर निर्भर करता है-

*"रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।*

*रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।।"*[vi]

अर्थात् हे भरतपुत्र (अर्जुन)! कभी-कभी सतोगुण रजोगुण तथा तमोगुण को परास्त करके प्रधान बन जाता है तो कभी रजोगुण अतोगुण तथा तमोगुण परास्त कर देता है और कभी ऐसा होता है कि तमोगुण सतो तथा रजोगुणों को परास्त कर देता है। इस प्रकार श्रेसःठता के लिए निरंतर स्पर्धा चलती रहती है। मगर समस्या तब आती है, जब रज या तम गुण जरूरत से ज्यादा बढ़ जाते हैं। यदि रज गुण बहुत बढ़ जाए, तो व्यक्ति वर्कहोलिक (Workaholic) या बेहद हिंसक हो सकता है। यदि तम गुण बहुत बढ़ जाए, तो व्यक्ति पूरी तरह से समाज से कट जाता है और आत्मघाती प्रवृत्तियों की ओर बढ़ सकता है। भारतीय मनोविज्ञान का अंतिम लक्ष्य मनुष्य को 'तम' से 'रज' की ओर (आलस्य छोड़कर कर्म में लगना) और फिर 'रज' से 'सत्त्व' की ओर (स्वार्थी कर्म से ऊपर उठकर निष्काम और संतुलित कर्म करना) ले जाना है। जब हम अपने भीतर इन गुणों के प्रभाव को समझने लगते हैं, तब हम अपने व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर पाते हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार, हर मनुष्य की चेतना इन तीन गुणों से संचालित होती है। चूंकी यह त्रिगुण मनुष्य की चेतना और उसके सभी कर्मों को प्रभावित करते हैं, यह अभिभावकत्व या पैरेंटिंग को भी संचालित करते हैं। महाभारत के माता-पिता भी इससे अछूते नहीं थे। आज पैरेंटिंग के विषय में महाभारत हमें किसी आधुनिक मनोवैज्ञानिक पुस्तक की तरह रास्ता दिखाता है।

**आमुख-**

महाभारत के अभिभावकों का अभिभावकत्व अत्यंत गहन, जटिल और प्रभावशाली है। इस गाथा के सभी माता-पिताओं ने अपने बच्चों के माध्यम से पूरे आर्यावर्त के भविष्य को आकार दिया। त्रिगुणों के आधार पर अभिभावकत्व या पैरेंटिंग ये तीन प्रकार के होते हैं- सात्त्विक पैरेंटिंग, राजसिक पैरेंटिंग और तामसिक पैरेंटिंग (Sattvik Parenting, Rajasik Parenting and Tamasik Parenting)। महाभारत में ऐसे बहुत कम या नगण्य चरित्र हैं, जिन्हें किसी एक प्रकार के चारित्रिक ढांचे में रखकर देखा जा सकता है। इसलिए इसके कई माता-पिता एक से अधिक पैरेंटिंग-श्रेणियों में आते हैं। एक अभिभावक के रूप में इन सभी का अपनी संतानों के प्रति व्यवहार, उनके निर्णय और उनके बच्चों का भविष्य इन गुणों से गहराई से प्रभावित था। आइए देखते हैं कि महाभारत के आईने में पैरेंटिंग के ये तीन रूप और इनके मिश्रित रूप कैसे दिखते हैं और आज के माता-पिता के लिए इनमें क्या सबक छिपा है-

**1. सात्त्विक पैरेंटिंग (Sattvik Parenting):**

. सात्त्विक मातृत्व और पितृत्व धर्म, त्याग और आत्मिक उत्थान का द्योतक है। यह पैरेंटिंग'धर्म'-प्रधान होता है, जहाँ माता-पिता का प्रेम मोह से ऊपर उठकर 'धर्म', न्याय और लोक-कल्याण पर आधारित होता है। यह ऐसा अभिभावकत्व है, जो पूरी तरह से विवेक, न्याय और लोक-कल्याण पर आधारित हो। महाभारत में शुद्ध सात्त्विक अभिभावकत्व के उदाहरण या प्रतीक निम्नलिखित हैं-

❖ **सात्त्विक मातृत्व के प्रतीक-**

➢ **सुभद्रा:** श्री कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा का मातृत्व शुद्ध सत्त्व गुण (त्याग, वात्सल्य और उच्च आदर्श) का प्रतीक है। वीर और संस्कारी संतान का निर्माण करने वाली सुभद्रा ने अभिमन्यु को गर्भ से ही वीरता के संस्कार दिए थे। उन्होंने अपने पुत्र को ऐसा सात्त्विक और वीर चरित्र दिया कि वह मात्र 16 वर्ष की आयु में अमर हो गया। ईर्ष्या और द्वेष से परे सुभद्रा का स्वभाव अत्यंत सरल और शांत था। पांडवों के कुल की बड़ी रानी द्रौपदी थीं, लेकिन सुभद्रा ने कभी अपने पुत्र के लिए किसी विशेषाधिकार की मांग नहीं की। उन्होंने द्रौपदी के पुत्रों (उपपांडवों) के साथ हमेशा प्रेम से ही व्यवहार किया। अंत में कुरुवंश का भविष्य उन्हों ने ही बनाया। कुरुक्षेत्र के विनाश के बाद, सुभद्रा के ही पोते परीक्षित ने कुरुवंश के दीपक को आगे जलाए रखा। यह सुभद्रा के सात्त्विक मातृत्व की ही जीत थी। सुभद्रा का मातृत्व यह दिखाता है कि एक शांत, सहानुभूतिपरक और धर्मनिष्ठ माँ कैसे आने वाली पीढ़ियों के लिए संकटमोचक बनती हैं।

➢ **गंगा और देवकी-यशोदा:** महाभारत की इन तीनों माताओं का मातृत्व पूरी तरह अलौकिक एवं वात्सल्य का रूप है। एक तरफ गंगा कर्तव्यनिष्ठता और अलौकिकता की प्रतीक हैं। गंगा ने देवव्रत (भीष्म) को जन्म देकर उन्हें वशिष्ठ जैसे ऋषियों से शास्त्र और परशुराम से शस्त्र की शिक्षा दिलवाई। जब पुत्र योग्य हो गया, तब उसे महाराज शांतनु को सौंप दिया। यह मोह-मुक्त और कर्तव्यनिष्ठ मातृत्व का उदाहरण है। | दूसरी तरफ देवकी और यशोदा त्याग और वात्सल्य की सजीव मूर्तियाँ हैं। देवकी ने जहाँ त्याग और वेदना के बीच श्री कृष्ण को जन्म दिया और जन्म के बाद भी त्याग की पराकाष्ठा झेली, वहीं यशोदा ने उन्हें असीम वात्सल्य दिया। महाभारत की पृष्ठभूमि में कृष्ण के चरित्र में इन दोनों माताओं का प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

❖ **सात्त्विक पितृत्व के प्रतीक-**

- **श्री कृष्ण:** इनका पितृत्व शुद्ध सात्त्विक और गुणातीत पितृत्व' है। श्री कृष्ण का पितृत्व सबसे अनोखा और सर्वोच्च है। वे सत्त्व गुण से संचालित थे और वास्तव में 'गुणातीत' (गुणों से परे/Detached) थे। उनका पितृत्व निष्काम कर्म और न्याय पर आधारित था। संतान के प्रति इनका प्रेम मोह-रहित प्रेम का उदाहरण है। कृष्ण अपने पुत्रों (प्रद्युम्न, साम्ब आदि) से प्रेम तो करते थे, लेकिन उनमें धृतराष्ट्र जैसा अंध-मोह रत्ती भर भी नहीं था। जब उनके पुत्र साम्ब ने गलतियां कीं (जैसे दुर्योधन की पुत्री का अपहरण या ऋषियों का अपमान), तो कृष्ण ने कभी उसका पक्ष नहीं लिया। साथ ही जब यदुवंश के युवक (जिनमें उनके अपने पुत्र और पौत्र शामिल थे) राजसिक और तामसिक अहंकार में चूर होकर आपस में लड़ने लगे, तब कृष्ण ने कुल को बचाने के लिए अधर्म का साथ नहीं दिया। उन्होंने अपनी आँखों के सामने अपने कुल और पुत्रों का अंत स्वीकार किया क्योंकि वे जानते थे कि अधर्म का नष्ट होना सृष्टि के नियम के लिए जरूरी है। इस तरह उन्हों ने न्याय और धर्म को हमेशा सर्वोपरि रखा।

सात्त्विक पैरेंटिंग आज की पीढ़ी को यह सिखाता है कि संतान यदि समाज या धर्म के लिए नासूर बन जाए, तो पिता को कुल-मोह छोड़कर न्याय का साथ देना चाहिए। सुभद्रा, गंगा, देवकी और यशोदा का मातृत्व जहाँ त्याग, वात्सल्य, वीरता और कर्तव्यपरायणता जैसे सत्त्व गुण के उच्च लक्षण दिखाते हैं वहीं श्री कृष्ण का पितृत्व व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर उठकर समष्टि के कल्याण को देखता है।

**2. राजसिक पैरेंटिंग (Rajasik Parenting):**

राजस अभिभावकत्व सत्ता, अहंकार और महत्वाकांक्षा से परिचालित होता हैं, जहाँ माता-पिता अपनी अधूरी इच्छाओं, सामाजिक प्रतिष्ठा, शक्ति और अहंकार को अपने बच्चों के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं।

❖ **राजसिक मातृत्व के प्रतीक-**

**सत्यवती:** सत्यवति के मातृत्व में अपने बच्चों और उनके वंश को हस्तिनापुर के सिंहासन पर बिठाने की तीव्र व्याकुलता झलकती है। कुल के भविष्य की चिंता में महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर सत्यवति धर्म और परंपराओं की सीमाओं को लांघने में भी संकोच नहीं करती। हस्तिनापुर की राजमाता सत्यवती का मातृत्व पूरे कुल के केंद्र में था। उनका मातृत्व परिवार के अस्तित्व और राज्य की स्थिरता से जुड़ा हुआ था। पहले तो सत्यवती ने राजा शांतनु से विवाह ही इस शर्त पर किया कि उनकी संतान ही हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठेगी। एक माँ के रूप में वे अपने बच्चों (चित्रांगद और विचित्रवीर्य) को राजा बनाने के लिए इतनी आतुर थीं कि उन्होंने भीष्म जैसे महान चरित्र का जीवन दांव पर लगा दिया। फिर जब उनके दोनों पुत्र बिना संतान के मृत्यु को प्राप्त हो गए, तब भी उनका वंश-मोह शांत नहीं हुआ। उन्हों ने कुल को नष्ट होने से बचाने के लिए अपने प्रथम पुत्र महर्षि वेदव्यास का आह्वान किया। नियोग प्रथा के माध्यम से उन्होंने धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर को जन्म दिलवाया। उनका मातृत्व भावुकता और प्रेम से अधिक कुरुवंश के सिंहासन पर अपनी संतान का अधिकार बनाए रखने की राजसिक ज़िद थी। सत्यवती: शुद्ध राजसिक मातृत्व' की पराकाष्ठा है।

- **द्रौपदी:** द्रौपदी का मातृत्व 'प्रबल राजसिक मातृत्व है, जो प्रतिशोध और न्याय की अग्नि में तपा हुआ है। वह अत्यंत गौरवशाली, स्वाभिमानी और राजसी लक्षणों से ओतप्रोत थी और यही उनके मातृत्व में भी झलकता है। स्वाभिमान और प्रतिशोध की ज्वाला: द्रौपदी में सदा धधकती रही। वह केवल एक माँ नहीं, बल्कि कुरुवंश के अन्याय के खिलाफ खड़ी एक महाशक्ति थीं। उन्हों ने अपने पांच पुत्रों (उपपांडव) को कभी भी अन्याय के सामने झुकना नहीं सिखाया। उनके मातृत्व में अपने अपमान का बदला लेने और बेटों को उनका हक दिलाने की राजसिक तड़प थी। युद्ध के अंतिम दिन अश्वत्थामा द्वारा अपने पाँचों सोए हुए पुत्रों की हत्या के बाद द्रौपदी का विलाप और न्याय की मांग, मातृत्व की गहरी क्षति को रेखांकित करती है। इसके बाद उनका अश्वत्थामा की मणि छीनकर न्याय की मांग करना और फिर उसे ज़िंदा छोड देने का निर्णय उनके राजसिक चरित्र को दिखाता है।

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

❖ **राजसिक पितृत्व के प्रतीक-**

➢ **आचार्य द्रोणाचार्य:** आचार्य द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा के प्रति अनुराग में इतने डूबे थे कि उन्होंने अपनी दरिद्रता मिटाने और राजसी ठाट-बाट के लिए हस्तिनापुर का आश्रय लिया। वहीं अर्जुन को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने की जिद में उन्होंने एकलव्य का अंगूठा तक मांग लिया। यह अपनी अगली पीढ़ी के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता साबित करने की राजसी प्रवृत्ति थी।

➢ **राजा शांतनु:** 'एक तरफ महारानी सत्यवति जहाँ राजसिक मातृत्व की परिकाष्ठा का प्रतीक थी, वहीं दूसरी तरफ महाराज शांतनु का पितृत्व भी इच्छाओं, आसक्ति और तात्कालिक सुखों से संचालित था, जो रजोगुण की मुख्य पहचान है। उन्हों ने व्यक्तिगत इच्छाओं को कर्तव्य से ऊपर रखा। वें एक प्रतापी राजा थे, लेकिन जब सत्यवती के प्रति उनका आकर्षण (काम/आसक्ति) बढ़ा, तब वे अपने योग्य और जेष्ठ पुत्र देवव्रत (भीष्म) के भविष्य को भूल गए। उनका यह निर्णय पूरी तरह राजसिक या इच्छा-संचालित था। अपनी खुशी के लिए शांतनू ने अपनी संतान पर त्याग का अनचाहा बोझ डाला। सत्यवती से विवाह की जिद के कारण उनके पुत्र देवव्रत को अपनी इच्छाओं की बलि देनी पड़ी और भीषण प्रतिज्ञा लेनी पड़ी। एक पिता के रूप में शांतनु का यह स्वार्थ भीष्म के पूरे जीवन की त्रासदी बन गया। राजसिक पितृत्व में व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा या इच्छाओं में इतना खो जाता है कि वह संतान के दीर्घकालिक भविष्य को दांव पर लगा देता है। शांतनु की इसी राजसिक प्रवृत्ति ने कुरुवंश के पतन के बीज बोए थे।

राजसिक अभिभावकत्व में संतान के प्रति माता-पिता का प्रेम अक्सर 'अधिकार और प्रतिष्ठा' का माध्यम बन जाता है और स्वयं की इच्छाएँ संतान के भविष्य से अधिक प्यारी होती हैं। इन सबकी इसी राजसिक महत्वाकांक्षा ने किसी-न-किसी तरह कुरुक्षेत्र के युद्ध की नींव रखी थी। आज के समय में जो माता-पिता अपने बच्चों को दूसरों के बच्चों से कम्पेयर करते हैं, उन पर अनावश्यक दबाव डालते हैं, या अपनी अधूरी इच्छाओं को बच्चों के ज़रिए पूरा करना चाहते हैं, वे 'राजसिक पैरेंटिंग' के उदाहरण हैं। यह पैरेंटिंग बच्चों को एक रेस का घोड़ा बना देती है, जिससे उनका स्वाभाविक विकास रुक जाता है।**3. तामसिक पैरेंटिंग (Tamasik Parenting):**

तामसिक अभिभावकत्व संतान के प्रति अंध-मोह, अज्ञान और अंत में उनके विनाश का द्योतक होता है, जहाँ विवेक पूरी तरह नष्ट हो जाता है। बच्चों की गलतियों पर पर्दा डालना, अधर्म को देखकर भी अनदेखा करना और अंततः विनाश को निमंत्रण देना इसके लक्षण हैं। महाभारत में शुद्ध तामसिक पैरेंटींग के उदाहरण के रूप में केवल धृतराष्ट्र ही मिलते हैं। धृतराष्ट्र का पुत्र-मोह इस श्रेणी का सबसे बड़ा उदाहरण है। हालांकी गांधारी का मातृत्व भी तमोगुणप्रधान था, जिसमें उनका आँखों पर पट्टी बांधना केवल पतिव्रत नहीं, बल्कि पुत्रों के कुकर्मों के प्रति जानबूझकर आँखें मूंद लेने का भी प्रतीक बना। मगर फिर भी उनका मातृत्व मिश्रित पैरेंटिंग में ही आता है, जिसे लेख में आगे विस्तार दिया जाएगा।

❖ **तामसिक अभिभावकत्व के प्रतीक:**

➢ **धृतराष्ट्र:** 'पुत्र-मोह' की पराकाष्ठा धृतराष्ट्र ने दुर्योधन के हर अपराध को मूक सहमति दी, जो विवेकहीनता और अज्ञान के अंधकार में पूरे कुल के विनाश का कारण बना। दुर्योधन ने लाक्षागृह की साज़िश रची, द्रौपदी का चीर-हरण किया, लेकिन धृतराष्ट्र सब जानते हुए भी अंधे (व्यंजित अर्थ में) बने रहे। वे केवल आँखों से नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी अपने पुत्र-मोह में अंधे थे। भीष्म पितामह, विदुर आदि धर्मवेत्ताओं के मार्गदर्शन के बावजूद धृतराष्ट्र में पुत्र-मोह के कारण विवेक का लोप हो गया। तमस का मुख्य लक्षण है भ्रम और सही-गलत की पहचान खो देना। धृतराष्ट्र जानते थे कि दुर्योधन अधर्म के रास्ते पर है, लेकिन 'मेरा पुत्र' की भावना इतनी प्रबल थी कि उन्होंने कभी उसे नहीं रोका। उन्होंने कड़े निर्णय लेने के बजाय परिस्थितियों के सामने घुटने टेक दिए। उनके इस तामसिक और आत्मघाती पितृत्व का परिणाम यह हुआ कि उनका पूरा कुल समूल नष्ट हो गया। उनका प्रेम रचनात्मक होने के बजाय विनाशकारी साबित हुआ।

आज के 'हेलिकॉप्टर पेरेंट्स' जो बच्चों की हर गलत आदत (जैसे- जरूरत से ज्यादा स्क्रीन टाइम, स्कूल में अनुशासनहीनता या दूसरों के प्रति असंवेदनशीलता) पर पर्दा डालते हैं या 'मेरा बच्चा ऐसा कर ही नहीं सकता' वाले मोड में रहते हैं, वे तामसिक पैरेंटिंग का शिकार हैं। यह अंध-मोह बच्चों को कमजोर, जिद्दी और अंततः समाज के लिए अनफिट बना देता है।

**4. मिश्रित पैरेंटिंग (Mixed Parenting):**

जैसा कि हमने पहले इस विषय में देखा कि महाभारत में ऐसे कई पात्र हैं, जिन्हें किसी एक ढांचे में रखकर विश्लेषित नहीं किया जा सकता। अभिभावकत्व में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जो शुद्ध सात्त्विक, राजसिक या तामसिक न होते हुए मिश्रित लक्षणों वाले अभिभावक हैं। ऐसे अभिभावकों में गांधारी, कुंती और अर्जुन प्रमुख हैं, जिनके चरित्र और अभिभावकत्व से आज की पीढ़ी सीख सकती है। आइए अब इन्हें विस्तार से समझते हैं-

❖ **मिश्रित मातृत्व:**

➢ **कुंती:** माता कुंती का मातृत्व 'सात्त्विक-राजसिक मिश्रित मातृत्व' था, जिसमें तमस की भी छाया दिखती है (Sattva-Rajas mixed with Tamas Elements)। माता कुंती ने अपने जीवन में असीम संघर्ष झेले, लेकिन अपने बच्चों को कभी 'विक्टिम कार्ड' खेलना नहीं सिखाया। उन्होंने पांडवों को सदैव संकटों से लड़ना और धर्म पर टिके रहना सिखाया। जब युद्ध की बारी आई, तब उन्होंने अपने बेटों को पीछे हटने के बजाय न्याय के लिए खड़े रहने की प्रेरणा दी। कुंती का मातृत्व महाभारत में धैर्य, संस्कार और धर्म का सबसे सुंदर उदाहरण है। उनका मातृत्व 'सत्त्वप्रधान' था, लेकिन परिस्थितियों के कारण उसमें रजस और तमस का भी प्रभाव रहा।

- सात्त्विक पक्ष: कुंती ने अकेले ही पांचों पांडवों को पाल-पोसकर बड़ा किया और उन्हें ऐसे सात्त्विक संस्कार दिए कि वे 'धर्म' के रक्षक कहलाएँ। सबसे खास बात यह है कि वे माद्री के पुत्रों से भी अपने पुत्रों के समान ही प्रेम करती थीं। युधिष्ठिर का यक्षप्रश्न के प्रसंग में नकुल का जीवन वापस मांगना कुंती के इसी सात्त्विक संस्कार का प्रमाण है।
- राजसिक पक्ष: कुंती एक धर्मनिष्ठ माता होने के साथ-साथ एक स्वाभिमानी क्षत्राणी भी थी। वह केवल शांत रहने वाली माँ नहीं थीं। जब पांडव जुए में सब हारकर वनवास काट रहे थे और कमजोर पड़ रहे थे, तब कुंती ने कृष्ण के हाथों संदेश भेजा था कि 'जिस अधिकार के लिए क्षत्रिय स्त्री पुत्र को जन्म देती है, वह समय आ गया है'। उन्होंने अपने बेटों को कायर बनने के बजाय अपने हक के लिए लड़ने की राजसिक प्रेरणा दी।
- तमस की छाया: महाभारत में कर्ण सर्वाधिक विवादास्पद चरित्र हैं। कर्ण के जन्म और कुंती द्वारा उनके परित्याग का प्रसंग कुंती में तमस की छाया को रेखांकित करता है। इसका पछतावा उन्हें जीवन भर रहा। मगर उन्हों ने भीतर ही भीतर छटपटाहट, होने के बावजूद पांडवों की एकता और धर्म की स्थापना को हमेशा सर्वोपरि रखा। इसी को उनके चरित्र पर कलंक के रूप में भी देखा जाता है कि अंतिम क्षण तक उन्हों ने कभी कर्ण की सच्चाई को नहीं स्वीकारा। इस प्रकार कुंती के मातृत्व में त्याग, संघर्ष, और न्याय का पुट रहा।

➢ **गांधारी:** गांधारी का मातृत्व तामसिक-सात्त्विक मिश्रित मातृत्व' था, जो तमसप्रधान रहा (Tamas-Dominant with Sattva Elements)। गांधारी का मातृत्व महाभारत की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक है। उनका मातृत्व मूल रूप से मोह और लाचारी से घिरा था, मगर उनके भीतर धर्म की गहरी समझ भी मौजूद थी।

- तामसिक पक्ष: कौरवों के पिता धृतराष्ट्र जहाँ जन्मांध थे और पुत्रमोह में भी अंधे थे, वहीं गांधारी ने अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर स्वेच्छा से अंधापन चुना। उन्हों ने सही-गलत का फर्क जानते हुए भी अपने पुत्रों के कुकर्मों के प्रति अपनी आँखें मूंद लीं। एक माँ के रूप में, वे कभी भी

दुर्योधन और उसके भाइयों की उद्दंडता को सीधे देखकर उन्हें डांट या सुधार नहीं सकीं। धृतराष्ट्र की तरह वे भी पुत्र-मोह में इतनी असहाय थीं कि उन्होंने दुर्योधन के पापों को जानते हुए भी उसे कभी कड़ाई से नहीं रोका।

- सात्त्विक पक्ष: यह सर्वविदित है कि गांधारी भले ही पुत्र-मोह से ग्रस्त थी, मगर धर्म की उनकी समझ किसी से कम नहीं थी। गांधारी का सत्त्व गुण युद्ध के समय निखर कर सामने आता है। वह जानती थीं कि दुर्योधन अधर्म के मार्ग पर है। इसलिए जब दुर्योधन युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद लेने उनके पास जाता है, तब एक तामसिक माँ 'विजयी भव' ही कहती, मगर सात्त्विक गांधारी ने 'यतो धर्मस्ततो जयः' (अर्थात जहाँ धर्म है, विजय वहीं होगी) कहा। युद्ध के बाद जब महर्षि वेदव्यास जांधारी का शोक कम करने और उसे हितबोध करने आते हैं. तब वें गांधारी को यह याद दिलाते हुए कहते हैं-

  *"याचमानंचतेपुत्रंवरंकुरुवरंतदा।*

  *ब्रूषेत्वंशीलसंपन्नेयतोधर्मस्ततोजयः॥"*[vii]

  अर्थात् हे शीलसंपन्ने (गांधारी)! जब तुम्हारा पुत्र (दुर्योधन) तुमसे अपनी विजय का वरदान मांगता था, तब तुम हमेशा उसे यही कहती थी कि 'जहाँ धर्म है वही विजय है'। गांधारी का यह वाक्य उनके मातृत्व को व्यक्तिगत सीमाओं से ऊपर उठा देता है। उन्होंने कभी अपने पुत्रों को सही राह नहीं दिखाई, मगर अपने पुत्र के सामने धर्म को छोटा भी नहीं होने दिया। युद्ध के बाद जब वे अपने सौ पुत्रों के शव देखती हैं, तो उनका मातृत्व शोक और क्रोध में बदल जाता है। वह भगवान कृष्ण तक को श्राप दे देती हैं, जो एक मां के असीम दुःख को तो प्रकट करता ही है साथ ही गांधारी की उस असीम तपस्या को भी दिखाता है, जिसकी शक्ति के कारण वह श्री कृष्ण को भी श्राप देने-योग्य बन गई। अतः गांधारी का मातृत्व मोह, न्याय और धर्म के अनूठे द्वंद्व को दिखाता है।

इस प्रकार कुंती का मातृत्व हमें सदैव सत्य और धर्म को सर्वोपरी रखना सिखाता है और अपनी ज़िम्मेदारी से भागने के भयानक नतीजे दिखाता है। दूसरी तरफ गांधारी का मातृत्व यह सिखाता है कि अगर माँ सही समय पर बच्चों की गलतियों के प्रति आंखें मूंद लें, तो चाहे वह व्यक्तिगत रूप से कितनी भी धर्मनिष्ठ क्यों न हो, अंत में केवल विलाप ही हाथ आता है

❖ **मिश्रित पितृत्व:**

➢ **अर्जुन:** महाभारत में अर्जुन कर्ण जितने ही अत्यंत चर्चित पात्र हैं। उनका पितृत्व उनके चरित्र की ही तरह 'मिश्रित रहा। वह 'राजसिक-सात्त्विक मिश्रित पितृत्व' के प्रतीक हैं (Mixed Rajas-Sattva Fatherhood), जिसमें रजस की प्रधानता थी, जो समय के साथ सत्त्व की ओर बढ़ी। अर्जुन का पितृत्व कर्म, कर्तव्य और संतान के प्रति गहरे प्रेम का मिश्रण है।

- राजसिक पक्ष: अर्जुन एक योद्धा थे और उन्होंने अपने पुत्रों (विशेषकर अभिमन्यु और बभ्रुवाहन) को सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय संस्कार और युद्धकला दी। वे अपने बच्चों के लिए एक रोल मॉडल थे। लेकिन युद्ध और दिग्विजय की राजसिक व्यस्तताओं के कारण वे अभिमन्यु के बचपन और विकास में लंबा समय साथ नहीं बिता पाए।

- सात्त्विक पक्ष: अर्जुन ने अपने पुत्रों को कभी अधर्म का मार्ग नहीं सिखाया। जब कुरुक्षेत्र में अभिमन्यु का वध हुआ, तब अर्जुन का दुख एक पिता के गहरे वात्सल्य (सात्त्विक प्रेम) और प्रतिशोध की राजसिक ज्वाला दोनों को दिखाता है।

अर्जुन का पितृत्व अपनी संतान को योग्य, साहसी और धर्मपरायण बनाने वाला था, भले ही राजसिक कर्तव्यों के कारण वे उनके साथ ज्यादा समय न बिता सके हों।

PASSION TOWARDS EXCELLENCE

इन सब के अभिभावकत्व का अध्ययन करने से यह समझ में आता है कि सात्त्विक पैरेंट आज के दौर में वे हैं, जो बच्चों को केवल सफल नहीं, बल्कि नैतिक इनसान बनाते हैं। वे बच्चों को मुश्किलों से बचाते नहीं, बल्कि मुश्किलों से लड़ना सिखाते हैं। यहाँ प्रेम का मतलब बच्चों की हर ज़िद पूरी करना नहीं, बल्कि उन्हें सही और गलत का अंतर समझाना है। लेकिन वहीं राजसिक और तामसिक अभिभावक वो हैं, जो अपने बच्चों के माध्यम से समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाना चाह्ते हैं और उन पर अपनी अधूरी इच्छाएँ थोपते हैं। भले ही इसके लिए उनके बच्चे गलत रासता ही क्यों न चुने, मगर वें बच्चों को सही मार्ग पर लाने की कोशिश भी नहीं करते, ऊपर से उनकी सभी गलतियों पर पर्दा डालने का काम करते है। आज के माता-पिता को खुद से एक ईमानदार सवाल पूछना होगा कि क्या हम कुंती की तरह बच्चों को मजबूत और नैतिक बना रहे हैं या द्रोणाचार्य की तरह उन पर अपनी महत्वाकांक्षाएं थोप रहे हैं या धृतराष्ट्र बनकर उनके आत्मघाती व्यवहार को बढ़ावा दे रहे हैं? इस तरह हम महाभारत के इन उदाहरणों के माध्यम से स्वयं का भी व्यक्तित्व निखार सकते हैं और अगली पीढ़ी का भी व्यक्तित्व-विकास कर सकते हैं।

**निष्कर्ष-**

महाभारत के माता-पिता मात्र हाड़-मांस के पुतले नहीं हैं, बल्कि वे हर युग के माता-पिता की प्रवृत्तियों के जीवंत उदाहरण हैं। इसमें अभिभावकत्व को किसी एक सांचे में नहीं ढाला गया है; अपितु यह रेखांकित किया गया है कि उसके सभी रूप अपने आप में अनूठे, गरिमामयी और कई बार द्वंद्वों से भरे हैं। महाभारत हमें सिखाता है कि पैरेंटिंग केवल बच्चों का पेट पालना या उन्हें महंगी सुख-सुविधाएं देना नहीं है। यह उनकी चेतना को आकार देने की प्रक्रिया है। आधुनिक युग में यदि हमें अवसाद, अकेलेपन और अनैतिक प्रतिस्पर्धा से घिरी पीढ़ी को बचाना है, तो हमें अपनी पैरेंटिंग को 'तमस' और 'रजस' के अंधेरे से निकालकर 'सात्त्विक चेतना' के प्रकाश में लाना होगा। महाभारत दिखाता है कि माता-पिता की मानसिक चेतना (Psychological state) कैसे उनकी अगली पीढ़ी के भविष्य को आकार देती है। सात्त्विक अभिभावकत्व से धर्म की स्थापना, रजस से संघर्ष और तमस से पूर्ण सर्वनाश होता है। इसलिए आज के समय में अभिभावकों को अपनी चेतना को तमस और रजस से ऊपर उठाकर सात्त्विक बनाने की आवश्यकता है, ताकि वे नई पीढ़ी को सही संस्कार दे सकें। तभी एक ऐसी पीढ़ी तैयार होगी, जो न सिर्फ करियर में सफल होगी, बल्कि जीवन के हर युद्ध में 'धर्म' और विवेक के साथ विजयी होगी।

**संदर्भ सूची-**


1. i. 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप'- भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, अध्याय 14, पृष्ठ 492, श्लोक 5
2. ii. वही, श्लोक 6
3. iii. वही, श्लोक 7
4. iv. वही, श्लोक 8
5. v. वही, श्लोक 9
6. vi. वही, श्लोक 10
7. vii. महर्षि वेदव्यास का 'महाभारत', गीताप्रेस गोरखपुर संस्करण, पर्व 11 (स्त्री पर्व), अध्याय 14, श्लोक 10


PASSION TOWARDS EXCELLENCE

**Cite this Article:**

**डॉ. बी. वी. एन. उमा गायत्री, "'महाभारत': एक त्रिगुणात्मक पैरेंटिंग गाइड 'MAHABHARAT' A TRIGUNA-BASED PARENTING GUIDE"** Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.356- 363, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

**डॉ. बी. वी. एन. उमा गायत्री**

**For publication of research paper title**

**'महाभारत': एक त्रिगुणात्मक पैरेंटिंग गाइड**

'MAHABHARAT' A TRIGUNA-BASED PARENTING GUIDE

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

**DOI:-** https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.38